---

# मुरली शब्दकोश भाग - 2

---

---

## मुरली में आने वालै कठिन हिन्दी शब्दों के अर्थ

---

657) अक्षौहिणी=अत्यंत विशाल सेना। जिसमें बहुत से हाथी घोड़े और पैदल सवार सैनिक हो।महाभारत के अनुसार इसमें २१,८७० रथ, २१,८७० हाथी, ६५, ६१० घुड़सवार एवं १,०९,३५० पैदल सैनिक होते थे।

बाबा ने कहा तुम पांडव विश्व की पूरी अक्षोहिणी सेना पर कल्प कल्प विजय हुए हो।

658) अजपाजप = अजपा जप एक शक्तिशाली मंत्र ध्यान अभ्यास है जिसमें सांस के साथ चुपचाप एक मंत्र को दोहराना शामिल है। अजपाजप की तरह पुरुषार्थ और शिव बाबा की याद निरंतर होती रहे।

659) अखुट =जो कभी समाप्त न हो या जो कभी नष्ट ना हो।

सब बच्चों को बेहद का अखुट खजाना ( ज्ञाश-योग का) बाप द्वारा मिला है । ऐसे अखुट खजाने से स्वयं को सदा भरपूर रहो।

660) आबाद = सम्पन्न, सुखी, सफल

661) अनुभवीमूर्त = अनुभव स्वरूप,जानकार।
जो अनुभवीमूर्त हैं,वह ज्ञान और योग के बल से विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं

662) अनुभूति= अहसास,महसूसता

663) अमली = मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला। अमली को अमल किए बगैर चैन नहीं आता। वह विष बिगर नहीं रह सकती।

664) अभुल = निर्दोष।
भूल तो सबसे होती हैं पर शिव बाबा सबको आकर अभुल बनाते हैं।

665) अमानत में खयानत= अमानत में रखी हुई चीज को खा जाना। विश्वासघात करना

666) अडोल= स्थिर , न हिलने - डुलने वाला।
माया के कितने भी तूफान आए परंतु हमें अंगद की तरह अचल अडोल रहना है।

667) अदब = नियंत्रण, सम्मान।

सतयुग में प्रकृति अदब में रहती है।

668) अटक = रूकावट,बांधा डालना।

669) अथाह = अनगिनत, बहुत अधिक मात्रा में।

जिस शिव बाबा से अथाह स्वर्ग की बादशाही मिलती है हमें उसे याद करना चाहिए

670) अधरकुमार/अधरकुमारी = शिव बाबा का ज्ञान लेने वाले व पवित्रता/ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले गृहस्थ पुरुष और स्त्री

जो काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठते हैं वही अधरकुमार अधरकुमारी कहे जाते हैं

671) अधमपना = दुष्टता, पापाचारी,पतित

672) अधोगति= पतन,दुर्गति,अवनति

673) अनहद नाद = वह नाद/संगीत या शब्द जो दोनें हाथों के अँगूठों से दोनों कोनों की लवें बंद करके ध्यान करने से अपने ही भीतर सुनाई देता है।चन्न - घन्न ' या ' सांय- साय ' की आवाज़ सुनाई देती है।

674) अमोलक = जिसका कोई मोल ना हो ,अमूल्य,अनमोल। हमारी हर एक सांस अमोलक है जिसे व्यर्थ नहीं गवाना है।

675) अलंकार = श्रृंगार,आभूषण।

शख,गंदा ये देवताओं के अलंकार के रूप में दिखाते हैं। जो संगम पर ब्राह्मणों के प्रतीक है।

676)अवलदीन = अल्लाह अवलदीन का नाटक हैं। अवलदीन एक गरीब लड़का है जो बगदाद शहर में रहता था। वह जादुई चिराग की मदद से बगदाद का राजा बन गया।

677) अशोक = शोक रहित।सतयुगी दुनिया को अशोकवाटिका कहा गया है। कलयुग में सब शोक वाटिका में हैं।

सतयुग-त्रेता में है सुख, अशोक वाटिका... सर्वोत्तम आदि सनातन देवी-देवता धर्म ...

678) अष्टावक्र गीता = इसमें अष्टावक्र और राजा जनक के संवाद है। भगवद्गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र के समान अष्टावक्र गीता अमूल्य ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में ज्ञान, वैराग्य, मुक्ति और समाधिस्थ योगी की दशा का सविस्तार वर्णन है।

679) असार = सार/तत्वरहित, तुच्छ, निस्सार

680) अयुत= अनुचित, आयोग्य,गलत

योग युक्त का कभी अयुत का कर्म और संकल्प नहीं हो सकता।

681) अयोनि= जो योनि/गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो।अजन्मा।

682) अलमस्त = चिन्तामुक्त , लापरवाह

शिव बाबा सम्मुख आते पर बच्चे अलमस्त होकर देख कर भी नहीं देखते और सुनकर भी नहीं सुनते।

683) अवधूत= संन्यासी, साधू

684) अव्यभिचारी भक्ति = एक शिव की पूजा होना।

द्वापर के शुरू में केवल एक परमात्मा की पूजा होती थी।

685) व्यभिचारी भक्ति = कलियुग प्रारंभ से अनेक देवी देवता की भक्ति शुरू हो जाती है। गीत गोविंद में सर्वप्रथम 700 ई में राधा का उल्लेख मिलता है। श्रीमद् भागवत गीता में गोपियों का उल्लेख तो है परन्तु राधा का नहीं।

686) अशर्फियां = सोने के सिक्के, मोहर

सतयुग में रुपए के रूप में असर्फियां होगी। पर आजकल की तरह नहीं

687) अष्टावक्र= अष्टावक्र महाज्ञानी थे। जिन्होंने राजा जनक को आत्मा का ज्ञान दिया।

688) असोचता= कोई संकल्प ना चलने वाला शिव बाबा।

689) अहिल्या,=ऋषि गौतम की पत्नी थी । वह अपनी सुन्दरता के गर्व से गलती करती है और शापित हो जाती है। राम के चरण स्पर्श होने पर वह पुनः अपने मानव रूप में आ गई।

पत्थरबुद्धि वालोंक्षकी तुलना बाबा अहिल्या

से करते हैं

690) अर्श = स्वर्ग/ तख्त, उज्ज्वल

691) आग का गोला = बम , मिसाइल, परमाणु हथियार।

भभोर को आग लगनी है इसलिए वैज्ञानिक आग गोला बना रहे हैं।

692) आजान करना =आह्वान करना।

सफलता ब्राह्मणों के रास्ते में फूल के समान आजान करती है।

693) आजियान= आपस में आह्वान करना।

694) आडम्बर = झूठा दिखावा करना, ठाट-बाट

695) आतुरवेला = उत्सुक,जल्दी

696) आथत = धीरज, धैर्यता

697) आपघात= आत्महत्या, खुदकुशी।

आपघात भी पाप है जो आप खाते में जमा होता है।

698) आईवेल = आवश्यकता के समय।

आईवेल के समय जो सहयोगी बनता है उनका आठ आना आठ करोड़ बन जाता है।

699) आखेरा= घोंसला

700) आजयान= आवाभगत, स्वागत, सत्कार

---

701) आटे में नमक = जिस प्रकार आटे में नमक बहुत कम होता है उसी प्रकार सच्चाई भी बहुत कम मात्रा में है।

702) आसामी = पात्र , योग्य, बड़ा आदमी

आसामी देख युक्ति से उठाना है । बोलो, हम भी शास्त्र पढ़ते हैं परन्तु बाप का फ़रमान है कि सभी को भूल मामेकम् याद ऊचे ते ऊंचे आसामी इस पतित दुनिया में हमारा मेहमान बनकर आया है यह नशा सदा चढ़ा रहना चाहिए।

703) आफरीन = शाबासी, प्रशंसा,बधाई।

704) इत्तलाव = सूचना, जानकारी, चेतावनी

705- आहुति= यज्ञ या हवन में हवनसामग्री को अग्नि में डालना, बलिदान।

बाप ने रूद्र यज्ञ रचा है लेकिन यह ज्ञान यज्ञ है, इसमें सबकी आहुति पड़नी है।देह सहित जो सब कुछ है, आहुति देनी है।

706- इत्तलाव = सूचना,, खबर, ऐलान, चेतावनी, जानकारी

707- फुलेल= फूलों की खुशबू से सुगंधित

708- उकीर = उमंग, प्यार

यह है ही नर्क, तो बाप को आना पड़ता है नर्क को स्वर्ग बनाने।

बाबा बहुत उकीर (प्रेम) से आते ..

709- उगारना= पागुर करना, ज्ञान का मनन चिंतन करना।

बाप बैठ जो शिक्षा देते हैं उसको फिर उगारना चाहिए, रिहर्सल करना चाहिए।

710- उड़ती कला सर्व का भला = ज्ञान योग में उड़ते रहो तो सबका भला होगा।

श्रेष्ठ वा तीव्र गति से उड़ान भरने वाले हो। वैसे गाना 'चढ़ती सर्व का भला' है लेकिन अभी कला का आदर्श क्या है? 'उड़ती कला, 'सर्व का भला'। अभी चढ़ती कला का समय भी ख़त्म हुआ, उड़ती कला की पहचान है सदा डबल लाइट।

711- उजूरा = प्रतिफल/रिटर्न/ प्रत्युपकार

भारत शिवबाबा की अवतरण भूमि है। ... फिर बाप आकर भक्ति का उजूरा देते हैं, पुजारी से पूज्य बनाते है।

712- उझाई = बुझा हुआ

हर घर में अंधियारा है। आत्मा की ज्योति उझाई हुई है। बाप आये हैं अपनी ज्योति से सबकी ज्योति जगाने।

713- उथल पाथल = उलट पलट, हलचल

उथल पाथल पूरी हो फिर राज्य शुरू हो जाता है। महाभारत लड़ाई तो वही है, अभी उथल-पाथल होगी। तो कई जो कच्चे हैं उनके तो देखकर ही प्राण निकल जायेंगे।

714- उथल-पुथल = क्रांति, विप्लव, परिवर्तन, इन्कलाब, हेर-फेर, रद्दोबदल।

उथल-पुथल होने में टाइम लगता है। बाम्स आदि बनाकर उसकी तैयारी करा रहे हैं।

715- उथल खाना= उलटना

कोई भी हालत हो माया का वार हो पर उथल नहीं खाना है ।

716- उतार चढ़ाव=भली बुरी स्थितियां कमी - वृद्धि।

अभी अभी कमाई अभी अभी गवांई यह उतार चढ़ाव तो सोचने समझने का समय निकल जाएगा।

717- उत्कन्ठा = तीव्र इच्छा/अभिलाषा, उत्सुकता

718- उड़ा देना= नष्ट करना,निकाल देना

अभी तुम्हें घर चलना है इसलिए पुरानी दुनिया का और इस शरीर

का भान उड़ा देना है।

719- उथलना = डगमगाना, डावाडोल होना, विस्फोट होना, हिलना।

धरती को उथलना है, विनाश होना है।

720- उद्धारमूर्त= संकट से निकालने वाला।

721- उमावस =अमावस्या,जिस दिन चंद्रमा को नहीं देखा जा सकता है।कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन को अमावस्या कहते हैं।

722- उल्टा झाड़ = कल्पवृक्ष

कल्प की आयु 5000 वर्ष की है , यह चैतन्य है,इसलिए इसे कहा जाता है कल्पवृक्ष | इस वृक्ष को चार भागों मे बांटा गया है जो चार युगों को दर्शाता है | इस कल्प वृक्ष के सबसे नीचे बीज दर्शाया है जो स्वयं शिव बाबा है इसलिए शिव बाबा को वृक्षपति - बृहस्पति कहलाते है | जैसे बीज में पूरे वृक्ष की नॉलेज होती है उसी प्रकार इस मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष के बीज शिव बाबा में कल्पवृक्ष के आदि - मध्य - अंत का ज्ञान है |

723- उलफत = प्यार। ब्राह्मणों को एक शिव बाबा से ही उल्फत रखनी है।

724- ऊधव= उद्धव श्री कृष्ण के मित्र थे। उन्हें हठयोग साधना का घमंड था। इसके द्वारा वह गोपियों को श्री कृष्णा के प्रेम को त्याग कर निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना करें।गोपिया श्री कृष्ण के वियोग में व्याकुल थी। लेकिन गोपियां तो श्रीकृष्ण के प्यार की दीवानी थी।

725- एक टिक = स्थिर, अच्छा

726- उल्टा- सुल्टा = अनावश्यक,व्यर्थ।

न क्रोध होना चाहिए, न कोई उल्टा-सुल्टा ख्याल आना चाहिए। विकारों की कोई भी बीमारी न हो।

727= उल्लू - एक पक्षी जो मूर्ख का प्रतीक है।

इस समय सब मनुष्य उल्लू मिसल उल्टे लटके हुए हैं । फिर सुल्टा होने से अल्लाह के बच्चे बन जायेंगे ।...

728- एकमत= एक की ही मत पर चलना अथवा किसी विषय पर सभी की एक राय होना। ब्राह्मण बच्चों को एक मत होकर एक शिव बाबा की मत पर ही चलना है।

729- एवजा= बदले में या प्रतिफल

अभी तुम अपना धन दान करते हो तो इसका एवजा फिर 21 जन्मों के लिए नई दुनिया में मिलता है ।..

730- ओखली =अन्न आदि कूटने का पत्थर या काठ का बना पात्र।

श्री कृष्ण को ओखली में बांधते थे।

731- ओना = फिक्र/ ख्याल

732- कवांठी = कावड़।कांवड़ देवाधि देव महादेव को प्रसन्न करने का सबसे सरल और सहज तरीका है।

733- कच्छ मे कुरम = बगल मे शास्त्र।

तुम ब्राह्मण हो, तुमको सच्ची गीता सुनानी है। वह(दुनिया वाले) तो कच्छ में कुरम उठाते हैं।

734 - कवल = कमल

ब्रह्मा के मुख से कवल रचता हूं

735- कखपति = भिखारी।

माया ने कखपति बना दिया। अब बाबा पद्मापति बनाते हैं।

736- कच्ची रसोई/पक्की रसोई=साधारण भोजन/ उत्तम भोजन

श्रीनाथ के द्वारा पर घी के कुएं हैं वहां पक्की रसोई बनती है। जगन्नाथ द्वारा पर कच्ची रसोई बनती है यही फर्क है।

737- कणे का घणा देना= कणा (थोड़ा) देकर बहुत ज्यादा पाना।

शिव बाबा देता भी है कणे का घणा करके और हिसाब भी करता है कणे कणे का।

738- कण्ठा = तट , घाट। राजधानी यही जमुना का कंठा देहली होगी।

739- कुण्डी वाले= पिजड़े में बन्द।

पिंजरे की मैना से उड़ते पंछी हो गये। कुंडी वाले उड़ने वाले तोता बन गए।

740- कनात = मोटे कपड़े का पर्दा

741- कपाट खुलना= दरवाजा खुलना, समझ में आना।

742- कपिलदेव= प्राचीन भारत के एक प्रभावशाली मुनि थे । गीता

में इन्हें श्रेष्ठ मुनि कहा गया है । कामधेनु कपिल मुनि के पास रहती थी।

743- कपूस = कपास, रूई।

ब्राह्मणों के पास पीस-प्रापर्टी सब है। इसलिए श्रीमत पर आग और कपूस इकट्ठे रहते भी पवित्र बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है।

744- कब्रिस्तान= श्मशान,मुर्दों को ज़मीन में दफ़नाने की जगह।

पुरानी दुनिया को कब्रिस्तान बनना है। पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य रख इसे भूल जाना है।यह अन्त का समय है, सब खत्म होना है।

745- कमबख्ती = दुर्भाग्य, भाग्यहीन

746- करामात= करिश्मा, चमत्कार, आश्चर्यभरा कार्य, सिद्धि, अचरज भरी बात, अनोखी बात

747- कण्ठी = माला, गले की पवित्र माला।

तोता भी एक पढ़ने वाला होता है जिसकी कंठी होती है ,यहां भी जो पढ़ेंगे वह कंठी (माला) में पिरोये जाएंगे।

748- कफनी= वह कपड़ा जो साधु पहनते हैं। कंपनी पहनने वाले साधुओं को उनके फॉलोअर और दूसरे लोग भी बहुत सम्मान देते हैं।

749- कमबख़्त= बदनसीब भाग्यहीन। यहां हजारों पढ़ते हैं लेकिन जिन्हें निश्चय नहीं हो पता उन्हें कमबख्त ही कहेंगे।

750- कमानधारी = धनुर्धर

सदा की हार से चंद्रवंशी में आकर कमानधारी बन जाते हैं।

751- कर्मकाण्ड = धार्मिक क्रियाकलाप ,। इसका सम्बन्ध पूजन, पाठ, यज्ञ, विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान से ही सम्बन्धित है।

752- कलराठी जमीन = बंजर जमीन।

यहां तो इतने मनुष्य हैं खाने के लिए नहीं मिलता। पुरानी कर लाठी जमीन है जो नई हो जाएगी।

753-कलाबाज = जादूगर,बाजीगर

कलाबाज या सर्कस में काम करने वाले हर कर्म करते हुए अपनी कलाबाजी दिखाते हैं ।

754-कशिश,= आकर्षण।

755-काटा लगाना = दुःख देना। यह है ही गन्दी दुनिया, एक दो को कांटा लगता ही रहता हैं।

756-कांध = सिर। मुरली सोते समय किसी कांध जैसा घूमता रहेगा।

757-काण्ड= किसी कार्य/ विभाग का भिन्न-भिन्न भाग

राम राज्य है सतयुग कांड तो कलयुग है भक्ति कांड।।।

758-काठी= लकड़ी

759-कर्म कूटना =पश्चाताप करना; सज़ायें खाना;

अपने किसी व्यवहार, भूल, दोष आदि के कारण होने वाला दुख। अभी बाप से तुम ऐसे कर्म सीखते हो जो तुमको 21 जन्म कभी कर्म कूटना नहीं पड़ेगा।कोई देवाला मार देते, कोई बीमार पड़ जाते, कोई की अकाले मृत्यु हो जाती... यह सब है कर्म कूटना ।...

760-कर्मभोग= कर्म का फल भोगना। जन्मो जन्मो से हमने जो

पाप किए हैं उसे हमें भोगना ही पड़ता है।

भोगना होता ही है इसलिए अच्छे या बुरे दोनों ही प्रकार के कर्मों का भोग कर्मभोग ही है।

761-कला काया= शरीर और उसकी विशेषताएं।

रावण उल्टा कर देते हैं तो कला काया हो जाती है फिर वह गिरते ही है।

762-कांटों का जंगल = दुखदाई दुनिया।

इस समय सारी सृष्टि कांटों का जंगल है।

763-काग विष्ठा = कौओं का मल

सन्यासी कहते हैं यह काग विष्ठा समान सुख है। परंतु में या नहीं पता था कि सतयुग में सदैव सुख था।

764-कपारी खुशी = बहुत खुशी

भक्त जिसकी महिमा करते हैं, तुम उनके सम्मुख बैठे हो, तो कितनी खुशी होनी चाहिए।

765-कायदेसिर= नियमानुसार

सतयुग में थोड़ेही दु:ख भोगेंगे। वहाँ तो कायदेसिर अपना रास्ता

लेकर चलेगी। यहाँ रास्ता छोड़ देती है।

766-कारून का खजाना-

कारून, जिसे क्रॉसस के नाम से भी जाना जाता है, को इतिहास के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक माना जाता है। वह एक इस्राएली थाजो ईजिटष्ट में रहता था। कारून के धन ने उन्हें धन का प्रतीक बना दिया; अपार धन; एक अमूल्य खजाना; अथाह संपत्ति।

767-काला मुंह करना-

बदनाम करना, बुरा काम करना। माया थप्पड़ लगाए एकदम काला मुंह कर देती है।

768-काशी के कलवट खाना = मोक्ष या मुक्ति पाने के लिए काशी के एक कुएं में कूद कर अपनी जान देना। जो अब प्रतिबंधित हो गया है।

एक बाबा की याद रहे यही है सच्ची काशी कलवट खाना।

769-काशीवास = मृत्यु को पाना, स्वर्गवासी, कहा जाता है कि काशी में मृत्यु होने पर सीधे स्वर्ग मिलता है।

770-किचड़ा = व्यर्थ

आत्मा के विकारों का किचड़ा निकाल शुद्ध बनना है। बाबा की

याद से ही सारा किचड़ा निकलेगा।

771-कीर्तन= ईश्वर की आराधना में गायन भजन करना।

772=काबर= एक प्रकार का जंगली मैंना, कौआ जैसा पक्षी।

बाबा के पास गॉडली बुलबुल हैं, मैनायें भी हैं, तोते भी हैं, कोई काबर भी हैं। सबसे लड़ते झगडते हैं।...

773-कामधेनु = शास्त्रों में कामधेनु गाय को देवताओं की सर्व इच्छाएं पूरी करने वाली बताई गई है।

इच्छा पूर्ण करनेवाली गाय (काम>इच्छा, धेनु-गाय) । बाबा कहते हैं कि जैसे मम्मा बाबा ने सर्व की मनोकामनायें पूरी की वैसे बच्चों को भी मम्मा बाबा समान सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करना है ।

774-कायदेमुजीब = कायदे के अनुसार, नियमानुसार।

मुख से शिव शिव नहीं बोलना है यह कायदेमुजीब नहीं है। इससे कोई फल नहीं मिलता।

775-काया कल्पतरु= पवित्र शरीर; शरीर कल्प वृक्ष समान बनना; शरीर का पूर्ण रूप से निरोगी होना और नई शक्ति आना ।

यहाँ आकर सृष्टि को पलटाए काया कल्प वृक्ष समान बनाते हैं।

अब तुम्हारी काया पुरानी हो गई है।

776- कालीदाह = एक सरोवर जिसमें कालिंदा नाम का राक्षस नाग के रूप में रहता था।

कालीदाह में सर्प को डसा। आज माया सबको डस रही।

777-कीचक= महाभारत में राजा विराट स्वभाव के जितने अच्छे थे, उतने ही बुरे थे उनके साले कीचक। कीचक की द्रौपदी पर कुदृष्टि थी। पहले तो कीचक ने द्रौपदी को बातों से फुसलाने की कोशिश की लेकिन बाद में वह अभद्रता पर उतर आया।

द्रौपदी के सम्मान पर वार करने की कोशिश कीचक को भारी पड़ गयी। द्रौपदी ने भीम को अपने अपमान की बात बताई तो भीम ने कीचक का वध कर दिया।

778-कूल्हा देना= मदद करना, सहायता देना, कंधा देना।

बापदादा संग बच्चों को कूल्हा माना कंधा देना है सर्विस में । सारी पुरानी दुनिया को रवाना करना है।

779-कूदना- खुशी होना,उछलना

780-कोटों में कोई =करोड़ों में कोई कोई ही ज्ञान में आते हैं।

781- कौड़ी तुल्य = बहुत कम मूल्य।हीरा जनम अनमोल था, कौड़ी बदले जाये।

यह ब्राह्मण जन्म हीरे तुल्य है । हम ब्राह्मण बच्चों को 21 जन्म की रजाई मिलती है माया में पड़कर इसे कौड़ी तुले नहीं बनाना है।

782- कुब्जा = टेढ़ी पीठ वाली स्त्री , कुबड़ी स्त्री

783- कुम्भकरण = रावण का भाई था। कहा जाता है कि उसको नींद से उठाना बडा कठिन है। आज्ञान की नींद में सोये हुए इन्सान को कुम्भकरण कहते हैं।

बाबा कहते तुम भी कुंभकरण की नींद में सोए हुए थे,बाप ने आकर जगाया है।

784-कुरूक्षेत्र= कुरुक्षेत्र, हरियाणा के उत्तर में स्थित एक जिले का नाम है। माना जाता है कि यहीं महाभारत की हुतालाह लड़ाई हुई थी ओर भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश यहीं ज्योतिसर नामक स्थान पर दिया था

785-क्षणभंगुर= क्षण भर में नष्ट होने वाला, थोड़े समय का सुख।

इस दुनिया में तो आजकल क्षणभंगुर सुख है।

786-खग्गे= आस्थिर, चंचल, जल्दी सुधरने वाले नहीं।

पुरुष तो जैसे खग्गे गए हैं। उनका बुद्धि योग बहुत भटकता है।

787- खटपटी = जटिल,पेचीदा

बाबा की नॉलेज अटपटी और खटपटी भी है।

788- खटिया उल्टा करना=

भारत के कुछ हिस्सों में, बेटी के जन्म पर नाराजगी व्यक्त करते हुए, या बेटी के मरने का विचार व्यक्त करते हुए, बिस्तर को उल्टा कर दिया जाता है ।

789- खड़ाऊं= काठ की बनी हुई पादुका जो पैर में पहनी जाती है।

कृष्ण की खड़ाऊ आज रखकर पूजा करते हैं। शिव बाबा कहते हैं मेरी ना तो चरण है ना ही खड़ाऊं  है।

790- खता= भूल,चूक, गलती।

791- खस-खस = पोस्ते का दाना

792- खान = जमीन के अंदर खोदा गया भंडार।

मधुबन है सब प्राप्तियां की खान तुम इस खान में आए हुए हो।

793- क्षीर = दूध, मीठा

बाप क्षीर बच्चों को कहते हैं, मम्मा बाबा कहकर घर भूल मत जाना।

794- खंडहर =किसी इमारत के भग्नावशेष, पुरानी इमारत के अवशेष या किसी ध्वस्त मकान का बचा-खुचा हिस्सा। इसी प्रकार यह शरीर भी कलियुग के अंत में पुराना हो गया है।

795- खग्गियां मारना= खुशी में उछलना

तुम अभी पूछ से पुजारी बन रहे हो इसलिए तुम्हें खुशी में रहकर खग्गियां मारना है।

796- खलास होना = नाश होना।

भल यहाँ रहते हो परन्तु बुद्धि में यह रहे कि इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह सब रावणराज्य है। जो खलास होना है।

797-खाक = राख, मिट्टी में मिल जाना

798- क्षीरखंड- दूध और चीनी की तरह मिलजुल रहना।

तुमको यहां क्षीरखंड बन कर रहना है। आपस में बहुत लव होना

चाहिए।

799- खाना खराब = अपना नाश करना।

माया ने खाना खराब कर दिया है।। ड्रामा अनुसार बाबा आकर अब खाना आबाद करते हैं।

800- खल = शरीर, चमड़ा।

तुम बच्चों को यह ख्याल है कि यह पुरानी कल छोड़नी है और नई लेनी है।

---

801-खिलाड़ी = खेलने वाला व्यक्ति।

माया के पांच खिलाड़ी है और प्रकृति के भी पांच खिलाड़ी हैं।इन 10 खिलाड़ियों को ब्राह्मण बच्चे ही समझते हैं।

802-खावन्ती= खा गई, माया अच्छे-अच्छे बच्चों को भी ज्ञान योग से छुड़ा देती है।

ब्रह्माकुमार कुमारी बनन्ती, कथन्ती फिर भी अहो मम माया अच्छे-अच्छे बच्चों को खावन्ती ।

803-खुटता = कम होना , समाप्त होना।

विनाशी धन खर्च करने से खुटता है। अविनाशी धर्म खर्च करने से पद्मगुना बढ़ता है।

804-खुदाई खिदमतदार = ईश्वरी सेवा में मददगार ,संदेशवाहक, मैसेंजर।

खुदाई खिदमतगार को सदा स्वत: ही खुदा और खिदमत अर्थात् बाप का स्नेह याद प्यार मिलता है।..

805-खुर - पशुओं के पैर का निचला भाग जो बीच से फटा होता है। लौकिक ब्राह्मण गऊ के खुर जितनी चोटी रखते थे।

806-खाना आबाद= तरक्की, खुशी

माया ने आकर खाना खराब कर दिया है बाबा अब जाकर खाना आबाद करते हैं।

807-खुखरी = नेपाली कटारी,छुरी

808-खिवैया = नाविक। खिवैया एक शिव बाबा जो विशेष सागर से परे ले जाकर भारत में सतयुगी दुनिया की स्थापना करते हैं।

809-खुदाप्रस्त = खुदा की राजधानी।

810-खुली छुट्टी = पूरी अनुमति। स्वतन्त्रता।

जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो खुली छुट्टी है।

811-खून के आंसू बहाना= कष्ट से बहुत दुखी होना।

812-खेरूत= खेत में काम करने वाला किसान।

813-खेलपाल = गोपियों ग्वालों के साथ श्रीकृष्ण का क्रीड़ा करना।

गंगा जमुना तो सतयुग में भी होती हैं कहते हैं श्री कृष्णा वहां खेलपाल करते थे।

814-खोखलापन =निरर्थक,सारहीन,महत्त्वहीन।

815-खोटे धन्धे = झूठे धन्धे

सबसे अच्छा धंधा है बाप और वर्से को याद करना। बाकी सब है खोटे धन्धे।

816-खोरस = इज्जत, अच्छी पालना।

मधुबन में आते हो तो विशेष खोरस रहती है।

817-खुश खैराफात= कुशल समाचार

818-खून की नदियां= खून खराबा होना, पिछड़ी में ऐसे लड़ेंगे की खून की नदियां बहेंगी।

819-गऊ का कोस = गोहत्या।

भारतवासी गऊ का कोस करने को सबसे बड़ी हिंसा मानते हैं परंतु शिव बाबा काम कटारी चलाने को सबसे बड़ी हिंसा कहते हैं।

820-गऊमुख कपड़ा =गोमुखी थैली एक कपड़े की थैली जैसी होती है। इसका प्रयोग माला जपने में किया जाता है। माला का जाप करते समय जपकर्ता माला को इस थैले में रखता है और माला को गुप्त रीति से जाप करता है।

821-गजघोर = गरजना

822-गदोला = बिस्तर/ बिछौना

823-गधाई = गधे का काम; मेहनत या बोझ उठाने का काम करने वाला;

824-खुश्क = सूखा, नीरस

खुश्क चेहरा नहीं दिखाई दे, खुशी का चेहरा दिखाई दे।

825-खैंच = आकर्षण ,अट्रैक्शन

826- खोट = बुराई,कमी-कमजोरी

827- किसी भी कार्य में अगर कोई प्रकार की खोट अथवा कमी होती है तो इसका कारण बाप की बजाए मेरेपन की खोट है।

828-गऊमुख= गोमुख माऊंट आबू के निकट एक मन्दिर है। गोमुख से बहते पानी को लोग पवित्र गंगा जल मानकर भक्ति से पीते हैं। बाबा कहते हैं कि सच्ची गोमुख तो ब्रह्मा बाबा है जिनकी मुख कमल से शिव बाबा ज्ञान की गंगा बहाते हैं। इस ज्ञान गंगा की सेवन ही आत्मा पावन बन सकती है।

829-गऊशाला = गायों का बाड़ा/घर।

यज्ञ की शुरुआत में 300 की भट्टी थी । गऊशाला में हजारों की अन्दाज़ में गऊयें हों तो कोई सम्भाल भी न सके | भट्टी भी थोड़ों की बननी थी।

830-गदाई= तुच्छ, नीच,बेकार।

आत्माओं को रजाई मिलती है अभी आत्माओं की गदाई है।

831-गप्प मारना = बकवास करना अनावश्यक बहस करना शेखी बघाड़ना।

अपनी जांच करनी है हम कितना बाप की याद में रहते हैं? इसमें गप्प मारने की बात नहीं।

832-गरूड-= सफेद रंग का एक प्रकार का पक्षी।गरुड़ भगवान विष्णु का वाहन हैं।

833-गल गये= गलकर गुप्त हो गये या लुप्त हो गये।

पांच पांडव हिमालय में गल गए। प्रलय हो गई।मनुष्य जो सुनते हैं उसे सत्य समझ लेते हैं।

834-गले का हार = अत्यंत प्यारा,बहुत प्रिय।

तुम पहले रूद्र के गले का हार बनेंगे फिर विष्णु के गले की माला में पिरोये जायेंगे।

835-गांवड़े का छोरा= गांव का लड़का।

यह भी गायन है गांवडे का छोरा... कृष्ण तो गांवड़े का हो नहीं

सकता है। वह तो बैकुण्ठ का मालिक है ..

836-गांठ बांधना = किसी बात को अच्छे से याद रखना।

गांधी गीता,=गांधी गीता एक पुस्तिका है जिसमें, भगवत गीता जो कि हिन्दू पौराणिक शास्त्र है। महान रचनाओं में से एक है, उस पर महात्मा गांधीजी के विचारों का प्रस्ताव है ।

837-गाजी= कपटी, धूर्त, दूसरों को दुख देने वाला।

... ऐसा काम कोई नहीं करे जो टेटर बने और अबलाओं पर अत्याचार हो । उनको गाजी भी कहा जाता है। ...

838- गाफिल=अचेत, बे-सुध,असावधान, लापरवाह।

ये जानते हैं बच्चे किं बरोबर बाबा आए, गाफिल हों करके सोओं नहीं अभी,

839- गिट्टी= मुख में रखने भर भोजन,कौर, निवाला।

बाबा ने सभी को स्नेह और शक्ति भरी दृष्टि देते गिट्टी खिलाई।

840-गलीचा = मोटा बिछौना

841-गिन्नी = सोने का सिक्का

.. बहन राखी बांध तिलक देती है फिर भाई बहन को अच्छी खर्ची देते हैं। गिन्नी भी देंगे। ...

842-गड़ गड़धानी बनाना= गड़बड़ करना

गायन भी है अचतम् केशवम्, गोपी वल्लभम्, जानकी नाथम्..... यह महिमा भी इस समय की है। परन्तु न जानने के कारण सब बातें गुड़-गुड़धानी

843-गुरू गोंसाईं = साधु, विद्वान

और सब जिस्मानी योग हैं मामा, चाचा, काका, गुरू गोसाई आदि सबसे योग रखते हैं। बाप कहते हैं इन सबसे योग हटाए मुझ एक को याद करो। ...

844-गुरूभाई = एक ही गुरु के शिष्य।

बाप दादा टीचर्स को ही गुरु भाई कहते हैं।

845-गुर्र गुर्र करना = गुस्से में बड़बड़ाना

846-गूजर = गोपाल , ग्वाले

..यहाँ जो गऊओं को सम्भालने वाले हैं, वह कहते हैं हम गूजर हैं। कृष्ण के वंशावली हैं। वास्तव में कृष्ण के वंशावली नहीं कहेंगे।

847-गेरू कफनी= गेरुआ या नारंगी रंग का कपड़ा।

848- गोते खाना = डुबकी मारना, धोखे खाना।

गंदे ते गंदी आदत है विषय सागर में गोते खाना।

849-गुम्बज =इमारत की गोल छत; इमारत का वह शिखर जो गोल आकार का हो जिसमें आवाज़ गूंजे।

मधुबन एक ऐसा विचित्र गुम्बज है ।जो मधुबन का जरा - सा आवाज विश्व तक चला जाता है।

850-गुरूशिखर=..

पर्वत की चोटी पर बनी गुरू शिखर मंदिर माउंट आब से 15 किलोमीटर दूर स्थित । है। यह मंदिर भगवान विष्णु के अवतार दत्तात्रेय को समर्पित है।

गुरूशिखर भी है। शिखर चोटी को कहा जाता है। पहाड़ी पर शिवबाबा का मन्दिर है। .

851- गुल-गुल = फूल

बाप आया है तुम्हें गुल-गुल बनाने, तुम फूल बच्चे कभी किसी को दुःख नहीं दे सकते,

852-गुलशन = बगीचा

853- गुह्य/गूढ़ = गहन गम्भीर जानकारी हो,अर्थ-गर्भित।

वही श्रीकृष्ण 84 जन्म लेते लेते अब पिछाड़ी के जन्म में है, जिसको फिर बाबा एडाप्ट करते हैं। पुराने को नया बनाते हैं, कितनी गूढ़ बाते हैं समझने की ।

854- गृहयुद्ध = गृहयुद्ध एक ही राष्ट्र के अन्दर संगठित गुटों के बीच में होने वाले युद्ध को कहते हैं। कभी-कभी गृह युद्ध ऐसे भी दो देशों के युद्ध को कहा जाता है जो कभी एक ही देश के भाग रहे हों। गृहयुद्ध में लड़ने वाले गिरोहों के ध्येय भिन्न प्रकार के होते हैं।

855-गोता = डुबकी

856-गोथरी= ब्रह्म बाबा,थैला।

बाप जाने बाप की गोथरी (ब्रह्मा बाबा), जाने।

857-गोदरी = राजाई, 21 जन्मों में देवता पद पाना।

858- घासलेट = मिट्टी का तेल।

कोई चीज में जंग लगी है तो उसे घाटलेट में डालते हैं।

859- गोदरी में करतार =पुराने शरीर में शिव बाबा की प्रवेशता

860~ गोप गोपी= मथुरा नगरी के स्त्री व पुरुष जो श्री कृष्ण से प्रेम करते थे।

अपने को गोप- गोपी समझना और निरंतर बाप को याद करना।

861-गोलक = गुल्लक, वह पात्र जिसमें थोड़ा-थोड़ा करके धन इकट्ठा किया जाता है।

862-घडी़ -घडी़ =थोड़ी थोड़ी देर बाद, बार-बार,बारम्बार।

सुख की महिमा अपरमअपार है। परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, रूठ पड़ते हैं।

863-घड़ी घड़ी के घड़ियाल,= थोड़ी थोड़ी देर में बदल जाना।

घड़ी-घड़ी के घड़ियाल - बाबा पास बहुत हैं, अभी देखो बड़े मीठे, बाबा कहेंगे ऐसे बच्चों पर तो कुर्बान जाऊं। घण्टे बाद फिर कोई न कोई बात में बिगड़ जाते हैं।

864-घर और घाट = परमधाम घर और राजधानी।

यही उम्मीद रखनी है कि हम बाप द्वारा पवित्र बन अपने घर और घाट में जायें। ...

865-घर के भाती=घर के सदस्य ,सारी दुनिया।

866-घराट = परिवार

867-गोपीचंद= गोपीचन्द भारतीय लोककथाओं के एक प्रसिद्ध पात्र हैं। वे प्राचीन काल में रंगपुर (बंगाल) के राजा थे। इन्होंने अपनी माता से उपदेश पाकर अपना राज्य छोड़ा और वैराग्य लिया था। इन्होंने अपनी पत्नी से महल में जाकर भिक्षा मांगी थी।

.-गोपीचन्द राजा की भी कहानी है। उनसे पूछा गया तुमने राज्य भाग्य क्यों छोड़ा? बोला प्रभू मिलन के लिए छोड़ा है।

868-गोबी= घाटा,नूकसान

869-गोरखधंधा= कोई जटिल कार्य जिसका निराकरण सहज न हो, अनियमितता या घपला' होता है.।

दिन में तो गोरख धंधा रहता है । रात को सन्नाटा रहता है । सब सो जाते हैं ।

870-गोला = सृष्टि चक्र का चित्र।

871-ग्रास = कौर, निगलना

872-घट घट= हर जगह,कण कण में।

सर्व आत्माओं का पिता परमात्मा एक है लोग कह दिया करते थे कि ईश्वर तो घट-घट वासी है।परन्तु ऐसा नहीं है।

873-घर की चरेत्री = गृहणी।..

मल्लयुद्ध होती है ना। तुम माताओं ने देखा नहीं होगा क्योंकि मातायें होती हैं घर की घरेत्री । ...

874-घोटना = अभ्यास करना जोर से दबाना।

875-चंवर = पंखा।

876-चक पहन लेती=काट लेती; पछताना। अच्छे-अच्छे पुराने बच्चे उनको भी माया ऐसे चक पहन लेती है।

877-,चकरी= षड्यंत्र,चंचल अस्थिर

माया की चकरी बहुत चलती है।

878,-चट्टियां = सीढ़ियां,मंजिल।

879-घात=हत्या,मार

880-घिस जाना= पुरानी अवस्था पाकर जर्जर होना।

.. उस ड्रामा की फिल्म चलते चलते घिस जायेगी, परानी हो जायेगी यह तो बेहद का अविनाशी ड्रामा है। ...

881-घुट घुट कर मरना =दुःखी होकर मरना; अनावश्यक कष्ट झेलना ।

घुट घुट कर मरना रावणराज्य में होता है। तुम खुशी से तैयारी कर रहे हो कि हम कब बाबा के पास जायें,

882-चंदा चिड़िया होना= चंदा इकट्ठा करना

883-चटाभेदी= कोशिश, संघर्ष।

.-किसमें कोई अवगुण, किसमें कोई | चटाभेटी भी चलती है। मेहनत बहुत है ...

884-चढ़ती कला = उन्नति में गाया भी जाता है सुदामा ने दो चपटी चावल दी तो महल मिल गये। बाबा 21 जाने की कला

.-रावण राज्य शुरू हुआ, सीढ़ी नीचे उतरे अब फिर चढ़ती कला सेकण्ड की बात है।

885-चत्तियां = सिला हुआ पट्टीयां

886- चपटी चावल ,=मुद्ठीभर चावल

गाया भी जाता है सुदामा ने दो चपटी चावल दी तो महल मिल गये।बाबा 21 जन्मों के लिए वर्सा दे देते हैं।

887-चमड़ापोश=चमड़े का वस्त्र;

कहते हैं चमडे का काम करने वाले को एक दिन की राजाई दी गई। तो उसने वहाँ का करेन्सी, कारोबार सब चमड़े की करा दिया । एक दिन की राजाई में ही उसनेए वहाँ की पूरी ही व्यवस्था बदल दी । उसको कहते हैं चमड़ापोश राजा ।

888-चाखड़ी=कांठ या लकड़ी का बना हुआ पैर में पहने जाने वाला खड़ाऊं या चप्पल।पादुका।

ंकृष्ण के मन्दिर में माथा टेकने के लिए चाखड़ी रखते हैं, मुझे तो पैर हैं नहीं जो तुमको माथा टेकना पड़े। ...

889-चावल मुट्ठी = थोड़ा सा चावल, मुट्ठी भर चावल।

गरीब बच्चे तो चावल मुट्ठी देकर महल ले लेते हैं

890-चिंदी = तिलक

891-चिचड़ = चिपकना

892-चिड़चिड़ापन - छोटी छोटी बात पर क्रोधित होकर नाराज होना।एक बाबा चाहिए बाप तो है ही लेकिन कई बार मन ... उस समय चिड़चिड़ापन आता है कि नहीं आता है

893-चीर उतारना = वस्त्र का अपहरण करना।

इस समय सब सब द्रोपदियां और दुशासन है जो सबकी चीर उतरते हैं

894-चूं चूं नहीं करना = कुछ नहीं बोलना, आवाज नहीं करना।।

895-चिदाकाशी ,,= एक आश्रम का नाम

896- चींटी मार्ग का पुरुषार्थ = धीमी मार्ग से पुरुषार्थ करना।

897-चिता = लड़कियों का वह ढ़ेर जिस पर शव को रखकर जलाया जाता है

898- चिंगारी= अग्निकण

अब लड़ाई लगी कि लगी। एक चिन्गारी से देखो आगे क्या हुआ था। ...

899-चीर चीर हो जाना = टुकड़े टुकड़े हो जाना।

900-चोबचीनी = बहुत ही लाभकारी दवा। एक लता जिसका उपयोग दवा के रूप में होता है।

---

901-चौपड़ी = पुस्तक, खाता लिखने की पुस्तक

902-चुहरा = सफाई करने वाले, सफाई कर्मी।

903-छठी = बच्चों के जन्म के छठे दिन होने वाला उत्सव/नामकरण।

904-छम-छम = भयपूर , चमक

माया की छम छम और रिमझिम काम नहीं है इसलिए उससे बचकर रहना।

905- छम छम तालाब = जादुई तालाब।

906-छिड़ जाना = शुरू हो जाना।

ऐसे ऐसे काम करते हैं, तंग कर देंगे तो लड़ाई भी छिड़ जाएगी।

907-चेतन = जीवित,

जीता जागता चित्र (शरीर) को मत देखो बल्कि चित्र के अंदर जो चेतन है उसे देखो।

908-चेष्टा= प्रयत्न ,कोशिश

909-चैतन्य = सचेत, प्रयत्न।

यहां बाप कहते हैं कि तुमको चैतन्य लक्ष्मी नारायण बनना है।

910-चौथ का चन्द्रमा= शास्त्रों में बताया गया है की चौथ का चंद्रमा देखने पर कलंक लगता है।

कृष्ण के लिए कहते हैं की चौथ का चंद्रमा देखा तभी इतनी गाली खाई।

911-छप्पर = परिश्रम करना, दुख का बोझ उठाना।

912-छांछ = दही से निकाला है हुआ मट्ठा।सारहीन।

ज्ञान है मक्खन, भक्ति है छांछ, बाप तुम्हें ज्ञान रूपी मक्खन देकर विश्व का मालिक बना देते हैं, ...

913-छुई-मुई=एक कंटीला पौधा जिसे स्पर्श करने पर मुरझा जाती है; लज्जावती; नाज़ुक मिज़ाज का व्यक्ति।

914-छुटेली = बंधन मुक्त हो।

.. बांधेली गोपिकायें पत्र ऐसे लिखती हैं, जो कभी छुटेली भी नहीं लिखती। उन्हों को फुर्सत ही नहीं। ...

915-छू मंत्र = जल्दी से गायब हो जाना

916-छोरे छोरियां = अनाथ बच्चे

917- छोटेपन = बचपन

918-जंगम = फकीर

आगे जंगम लोग कहते थे - ऐसा कलियुग आयेगा जो 12-13 वर्ष की कुमारियां बच्चा पैदा करेंगी । अब वह समय है ...

919-छी छी = गंदा,भ्रष्ट,पतित

920- जफाकसी = खींचतान, खूब मेहनत करना।

921-जमघटों को फांसी = मृत्यु का जाल

बाप आए हैं तुमको जमघातों की फांसी से छुड़ाने।

922-जमघटों को फांसी = वे सजायें जो यमदूत देते हैं।

923-जागीर = पुरस्कार स्वरूप मिलने वाली जमीन, मिलकियत

924-जमघट = जमा हुए सभी विकर्म ,यमदूत।

.. बाप कहते हैं - मैं कालों का काल भी हूँ । वह जमघट तो एक दो को ले जाते हैं। बाप कहते हैं - मैं तो सब आत्माओं को ले जाऊंगा ...

925-जमते जाम = जन्म लेते ही होशियार राजा

.जमते जाम तो कोई हो नहीं सकता | इस कारण बाबा कहते हैं 5 विकार रूपी रावण पर जीत पानी है, श्रीमत पर ...

926-जरासंध= जरासंध महाभारत कालीन मगध राज्य के नरेश थे । सम्राट जरासंध ने बहुत से राजाओं को अपने कारागार में बंदी बनाकर रखा था पर उसने किसी को भी मारा नहीं था। इसका कारण यह था कि वह चक्रवर्ती सम्राट बनने की लालसा हेतु ही वह इन राजाओं को बंदी बनाकर रख रहा था ताकि जिस दिन 101 राजा हों और वे महादेव को प्रसन्न करने के लिए उनकी बलि दे सके।

चाहे कंस हो, चाहे जरासंध हो, चाहे रावण हो - कोई भी हो लेकिन फिर भी रहमदिल बाप के । बच्चे कभी घृणा नहीं करेंगे।

927- जल मरना न्योछावर होना।बलिहार होना।

928- जहन्नुम= नरक, दोजख।

पुरानी दुनिया से दिल लगाना माना जहन्नुम में जाना है। बाप आकर दोज़क से बचाते हैं ...

929-जहान के नूर = संसार को प्रकाश देने वाला।

जहांन के नूर वह है जो बाप दादा को अपने नयनों में समाने वाले हैं।

930-जागीरवार= जमींदार, भूस्वामी

931-जानीजाननहार = सब कुछ जानने वाला।

बच्चे तो सबकी महिमा को जानते हो।

बाबा को कहा जाता है जानीजाननहार, परन्तु जानी-जाननहार का अर्थ बच्चे पूरा समझते नहीं।

932-जामड़े = छोटा, बौने।

पुण्य आत्मा बनने के लिए पुरूषार्थ कर और फिर पाप करने से सौगुणा पाप हो जाता है फिर जामड़े रह जाते हैं, वृद्धि को पा नहीं सकते।

933-जार जार रोयेंगें = खूब रोयेंगें।

जीते जी मरना = जीते हुए सांसारिक बातों से( मोह माया ) मरना।

मनुष्य मरना नहीं चाहते हैं। तुम तो जीते जी मर चुके हो। इस दुनिया में कोई से प्यार नहीं। इस शरीर से भी प्यार नहीं।

934-जीयदान =जीवनदान,प्राणदान,शत्रु या अपराधी के प्राण न हरण करना ।

बाप समान रहमदिल बन हर एक को जीयदान देना है

935-जीवन डोर = जीवन का सहारा।

936-जीवपना = दैहिक स्मृति/ याद।देहीभिमानी स्थिति।

जब परमात्मा बाप आकर के जीव आत्माओं से मिलते हैं तो जीव आत्मा को अपना जीवपना भूल जाता है। ...

937-जुत्ती = शरीर

938-जूं मिसल = जुआं जैसा धीरे - धीरे चलना,

ड्रामा भी जूँ मिसल चलता है ना। तुम भी धीरे-धीरे नीचे उतरते हो तो 1250 वर्ष में दो कला कम हो जाती हैं ...

939-जास्ती= अधिक

940-जिन्न = काल्पनिक भूत,किसी भी स्थान तक मात्र अपनी इच्छा से पहुंच सकते है। उन सभी कार्यों को जिसे एक इंसान कई सालों की मेहनत से कर पाता है वह मात्र अपनी इच्छा से कर सकते हैं।

941-जुलुम = दुर्व्यवहार, जबरदस्ती

942-झझी = बहुत अधिक

943- झटपट का सौदा = तुरन्त करने वाला व्यापार

944-झटपट कुल्फी एक पैसा- कराची में जो भी ओम मंडली में आते थे उन्हें फौरन साक्षात्कार होते थे तो लोग कहते थे जेसे बाजार में एक पैसे में कुल्फी मिलती है ऐसे ओम मंडली में साक्षात्कार होता है।

. जब आरम्भ किया था, बापदादा ने सिन्ध में आरम्भ किया तो सिन्धी में कहते थे, उस समय झटपट कुल्फी एक पैसा ।

945-झलक= क्षणिक दर्शन

946-झांझ= मंजीरा ।गोलाकार पीतल की प्लेट जिसका उपयोग ताल वाद्य यंत्र के रूप में किया जाता है, जिससे विभिन्न प्रकार की धात्विक ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं जोड़ियों में उपयोग किया जाता है, जिन्हें आपस में टकराकर बजने वाली ध्वनि उत्पन्न होती है।

947-झाटकू=एक झटके में मरना ।

एक धक से मरजीवा बनना इसे ही झाटकू कहते हैं।

948-छुटका खाना =< झपकी खाना।

949-झरमुई झगमुई = पर चिन्तन

इसने क्या किया, उसने क्या किया ... ये सब छोड़कर झरमुई-झगमुई में जाना,फंसना मूर्खता है।

950-झुझकी = हिचकी

951-टट्टू = गधा,कम अकल वाला, विकारी।

रावण का चित्र बिल्कुल क्लीयर है 5 विकार स्त्री से, 5 विकार पुरूष सें । इनसे गधा अर्थात् ट्टट्टू बन जाते हैं इसलिए ऊपर में गधे का शीश" देते हैं। ...

952-टांगर = एक प्रकार का विषैला पुष्प, जिसमें सुगंध नहीं होती।

सदा गुलाब के फूल वह हैं जो देवी-देवता धर्म के आलराउन्ड ... कोई चम्पा हैं, कोई चमेली हैं, कोई टांगर हैं, कोई अक है

953-टाल टालियां = शाखाएं

954-टिकलू टिकलू करना = बातें करना/आलापन करना

कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है। कभी भी रूठना नहीं है। ... ज्ञान की टिकलू-टिकलू, भूं- भूं और शंखध्वनि करते रहना है ।

955-टिप्पड़ = माथा।

956-टिफुटी = तीन फुट

957-टिवाटा = जहां तीन रास्ते एक साथ मिलते हैं।

--तीन गली के बीच में टिवाटा होता है। अब हम किस तरफ जायें? एक गली है मुक्ति की, एक गली है जीवनमुक्ति की और एक है नर्क की। ...

958-टीका करना = आलोचना करना, दोषारोपण करना।

... किसी को सीधा नहीं कहना है कि भगवान् आया हुआ है, ऐसा कहेंगे तो लोग हसी उड़ायेंगे, टीका करेंगे ...

959-टोकरधारी = टोकरी उठाने वाली।

तो ताजधारी हो या टोकरेधारी हो? टोकरा उठाना और ताज पहनना कितना फर्क हो गया। ...

960-टीका टिप्पणी= व्याख्या, विचार विमर्श करना।

961-टपकना = बूंद - बूंद कर गिरना। यह ज्ञान सर बुद्धि में टपकना चाहिए। तो खुशी पूरी रहेगी।

962-टेव = आदत

963- ट्रां ट्रां करना =बकवास करना, बकबक करना।

964- टिंडन = छिफकली।

अगर वह बिच्छू टिंडन पैदा ना हो, तो इन राक्षसों की दुनिया का कैसे होगी... मुरली में तपस्या का रूप बताया-आत्मिक स्थिति में रहना ही है।

965-टिकाड़े = मन्दिर,धार्मिक स्थल।

966-टोपी उतारना = बेइज्जत करना। दूसरों को अपने पद से उतारना।

967-टोली = बाबा के ज्ञान यज्ञ में बनाए गए खाद्य पदार्थ।

968-ठगत = धोखेबाजी,चालाकी

969-ठगी = धूर्तता

970-ठाठ = दिखावट, प्रदर्शन, आडम्बर

बाप कहते हैं कि मुझे साधारण तन में आना है। भभका व ठाट कुछ भी नहीं रह सकता हूं।

971-ठिठकी = मटकी के टुकड़े, कंकड़

972-ठिक्कर- भित्तर = पत्थर के भीतर।

दुनिया वालों ने तो भगवान को सर्वव्यापी कह ठिक्कर भित्तर में कह दिया है इसलिए खुद भी पूरे ठिक्कर बन पड़े हैं।फिर कहते ठिक्कर-भित्तर कण-कण में परमात्मा है, तो सब परमात्मा हो गये।

973-डंक मारना = नुकसान पहुंचाना,कांटना

974-डांवाडोल= चंचल, हिलना ।

यह परानी दुनिया खलास हो जानी है। सागर की एक ही लहर से सारा डांवाडोल हो जायेगा। विनाश तो होना ही है ना।

975-टोलपुट = प्यारे,मीठे बच्चे।

976-ठका सुनना = धड़ाके का शब्द सुनने से। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से ख़त्म हो जायेंगे।

977-ठर जाना = ठंठा या शीतल हो जाना।

978-ठिक्कर ठोबर = व्यर्थ,बेकार,फालतू, कौड़ी तुल्य।

इस पुरानी दुनिया में तो ठिक्कर-ठोबर हैं इनसे बुद्धियोग निकाल बाप और नई दुनिया को याद करना है।

979-ठोकरें खाना= मुसीबत झेलना, तकलीफ आना, आफत मे पड़ना।

जब रावण राज्य शुरू होता है तब ठोकरें खाना शुरू होती है।

980-डाडे = दादा , ब्रह्मा बाबा

981-डात = भगवान की देन,

ज्ञान में कितनी साइलेन्स है इसको ईश्वरीय डात (देन) कहते हैं। साइंस में तो हंगामा ही हंगामा है। वह शान्ति को जानते ही नहीं।

982-डोढा /ढोढा = बाजरे की सूखी रोटी

... जैसे स्थापना के आरम्भ में आसक्ति है वा नहीं, उसकी ट्रायल के लिए बीच बीच में जानबूझकर प्रोग्राम रखते रहे। जैसे, 15 दिन सिर्फ डोढ़ा और छाछ खिलाई, गेहू होते भी यह टायल कराई गईं।

983-ढाका = सीढ़ी

984-तगारी = बाल्टी

985-तत्त्वज्ञानी =ब्रह्म तत्व को ही ईश्वर मानने वाले।

कोई कहते हैं ब्रह्म ही ईश्वर है। तत्वज्ञानी ब्रह्म ज्ञानी ही है।

986-डिब्बी मे ठिकरी = डिब्वा खोला तो मिट्टी मिली;

अर्थात् जो कहा जा रहा है उसे समझ में नहीं आ रहा है तो उस व्यक्ति के दिमाग में कुछ भी नहीं है ।

987-डेगियां = बड़े बड़े पतीले।

बेहद के बाप का बेहद का यज्ञ है। कब से डेगियां चढ़ती आई हैं। अभी तक भण्डारा चलता ही रहता है ...

988-डेल = मोरनी

989-ढाल = रक्षा करने वाला अस्त्र

990-ढ़िढोरा पिटवाना = घोषणा करना। गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा दो कि मनुष्य से देवता, नर्कवासी से स्वर्गवासी ... ब्राह्मणों को ही खिलाते हैं।यह तो तुम ढिंढोरा पिटवा दो जो कोई फिर उल्हना न देवे।

991-तम्बूरा =सितार की तरह का तीन तारों वाला एक बाजा जो स्वर में संगति देने के लिए बजाया जाता है।

992-तख्तनशीन = राजगद्दी पर बैठना।

इस समय सभी बच्चों को ताज व तख्त नशीन बनाते हैं। तख्तनशीन अगर हैं तो ताजधारी भी होंगे।

993-तजना = छोड़ देना ।त्यागना।

994-तड़फना =व्याकुल होना।

भक्त लोग आप की दर्शनीय मूर्तियों का एक सेकेण्ड दर्शन करने के लिए तड़फ रहे हैं। ऐसे भक्तों की तड़फ अनुभव करते होः ...

995-तत्तल / तत्ते= गरम

996-तरकश = तीर या बाण रखने का पात्र।

ज्ञान रुपी बाणों को बुद्धि रुपी तरकश में भरकर माया को ललकारने वाले ही महावीर योद्धे हैं। ...

997- तिक तिक करना = ज्यादा बात करना,परेशान करना।

998-तकरीब= युक्ति । उपाय । तरीका।ढंग । ढब । जैसे,—उन्हें यहाँ लाने की कोई तरकीब सोचो ।

999-तरस = दया,करूणा

1000-तलाक = माया से बंधन तोड़ना, विवाह विच्छेद

माया को तो सबने तलाक दे दिया है ना ! तलाक देना अर्थात् ... आप सब कितने लकीएस्ट हो , जो दूर - दूर से बाप ने अपने बच्चों को ढूंढ लिया।

---